"रीतिकाल की विविध काव्य धाराएँ"

रीतिकालीन काव्य को मूलतः तीन वर्गों में विभक्त किया गया है, ये तीन धाराएँ हैं—

(i) रीतिबद्ध काव्य
(ii) रीतिसिद्ध काव्य
(iii) रीतिमुक्त काव्य

रीतिबद्ध काव्य —

रीतिकाल के वे कवि जिन्होंने लक्षण ग्रन्थों की परिपाटी पर काव्यांगों का लक्षण एवं उदाहरण देते हुए रीति ग्रन्थों की रचना की, रीतिबद्ध कवि कहलाए। अपने समकालीन राजाओं के आश्रय में रचना करने वाले रीतिकाल में ऐसे सैकड़ों कवि हुए जिन्होंने आचार्य बनने के लिए लक्षण ग्रन्थों की रचना की। इन सभी कवियों द्वारा किया गया रीति निरूपण एकांगी, अधूरा एवं अपरिपक्व है। इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐसे कवियों के रीति ग्रन्थों पर टिप्पणी करते हुए लिखा है— "इन रीति ग्रन्थों के कर्ता भावुक सहृदय और निपुण कवि थे। उनका उद्देश्य कविता करना था, न कि काव्यांगों का शास्त्रीय पद्धति पर निरूपण करना। हिन्दी में लक्षण ग्रन्थों की परिपाटी पर रचना करने वाले जो सैकड़ों कवि हुए वे आचार्य कोटि में नहीं आ सकते। वे वास्तव में कवि ही थे।"

रीतिबद्ध कवियों का प्रमुख उद्देश्य अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय देना था। अतः वे लक्षणों पर उतना ध्यान नहीं देते जितना उदाहरणों पर दिया। यही कारण है कि इनके द्वारा

।

दिए गए काव्यांगों के लक्षण अपर्याप्त एवं असंगत हैं। रीतिकाल के प्रमुख रीतिबद्ध कवि एवं उनके ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

चिन्तामणि – काव्य विवेक, कविकुल कल्पतरु, शृंगार मंजरी।
मतिराम – रसराज, अलंकार पंचाशिका, ललित ललाम, वृत्त कौमुदी, सतसई।
भूषण – शिवराज भूषण, अलंकार प्रकाश, छन्दोल्लास, प्रकाश, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक।
कुलपति मिश्र – रस रहस्य, नखशिख, दुर्गा भक्ति तरंगिणी
मण्डन – रस रत्नावली, रस विलास, नैना पचासा, काव्य रत्न।
देव – भाव विलास, भवानी विलास, रस विलास, काव्य रसायन
पद्माकर – जगत विनोद, पद्माभरण, प्रतापसिंह विरुदावली, प्रबोध पचासा, गंगा लहरी।
ग्वाल कवि – नखशिख, अलंकार भ्रम भंजन, रस रूप, कवि दर्पण।
भिखारीदास – काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, रस सारांश, छन्दार्णव पिंगल, छन्द प्रकाश।
रसलीन – अंग दर्पण, रस प्रबोध।
द्विजदेव – शृंगार लतिका, शृंगार बत्तीसी, कवि कल्पद्रुम।
दूलह – कविकुल कण्ठाभरण।
जयवन्त सिंह – भाषाभूषण, आनन्द विलास, सिद्धान्त बोध, अनुभव प्रकाश
गोप – रामचन्द्राभरण, रामचन्द्र भूषण, रामालंकार।
सोमनाथ – रस पियूष निधि, शृंगार विलास, प्रेम पचीसी। आदि। इन कवियों ने सामान्य पाठकों को काव्यशास्त्र का सामान्य ज्ञान कराने के उद्देश्य से रीतिग्रन्थ लिखे, जिनमें मौलिकता का

नितान्त अभाव है, क्योंकि ये सारे ग्रन्थ संस्कृत काव्यशास्त्र को आधार बनाकर लिखे गए। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिन्दी में काव्यशास्त्र का द्वार खोलने का श्रेय इन रीतिबद्ध रीतिग्रन्थकार कवियों को अवश्य दिया जा सकता है।

रीतिसिद्ध काव्य —

रीतिसिद्ध कवियों के वर्ग में उन कवियों की गणना की जाती है, जिन्होंने यद्यपि कोई रीतिग्रन्थ नहीं लिखा, तथापि रीति की उन्हें अच्छी जानकारी थी, जिसका उपयोग करते हुए उन्होंने अपने काव्य ग्रन्थों की रचना की। ये 'रीति' में पारंगत या सिद्ध कवि थे, इसलिए इन्हें रीतिसिद्ध कवि कहा गया। इस वर्ग के प्रतिनिधि कवि बिहारी हैं। बिहारी ने यद्यपि कोई रीति ग्रन्थ नहीं लिखा तथापि उन्होंने अपनी एकमात्र रचना 'सतसई' में रीति की जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग किया है। भाव-अनुभाव योजना की दृष्टि से बिहारी सतसई एक उल्लेखनीय कृति है। भाषा की समास शक्ति एवं कल्पना की समाहार शक्ति के बल पर ही बिहारी दोहे जैसे छोटे छन्द में इतने भावों का समावेश कर सके हैं।

रीतिमुक्त काव्य —

रीतिकाल के वे कवि जो 'रीति' के बन्धन से पूर्णतः मुक्त हैं— रीतिमुक्त कवि कहे जाते हैं। इन्होंने न तो लक्षण ग्रन्थ लिखे और न रीति की जानकारी का उपयोग अपने काव्य में किया, अपितु इन कवियों

ने स्वयं की स्वतंत्र वृत्तियों को अपने काव्य में निबद्ध किया। रीति के बन्धन से मुक्त होने के कारण ही इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया। इन कवियों में प्रमुख हैं — घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर आदि। रीतिमुक्त कवियों को अनेक वर्गों में विभक्त किया गया है, जैसे — रीतिमुक्त शृंगारी कवि, रीतिमुक्त प्रबन्धकार कवि, रीतिमुक्त मुक्तिकार कवि, रीतिमुक्त फुटकल कवि आदि।

रीतिमुक्त शृंगारी कवियों में स्वच्छन्द प्रेम का चित्रण करनेवाले कवि घनानन्द, बोधा, आलम और ठाकुर के नाम लिए जा सकते हैं। रीतिमुक्त प्रबन्धकार कवियों में लाल कवि (छत्र प्रकाश), सूदन (सुजान चरित), सबल सिंह चौहान (महाभारत) आदि को रखा जाता है जबकि रीतिमुक्त मुक्तिकार कवियों में वृन्द, गिरिधरदास, घाघ, वेताल जैसे कवियों की गणना की जाती है। रीतिमुक्त कवियों की प्रवृत्ति मुक्तक रचना की अधिक रही है। इन कवियों ने लाक्षणिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें भाव व्यंजना की अपूर्व क्षमता है। निश्चय ही रीतिमुक्त कवियों के प्रदेय ने हिन्दी साहित्य की पर्याप्त श्री वृद्धि की है।